

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 79 — बलराम की तीर्थयात्रा

5 October 2026



नैमिषारण्य के ऋषियों को बल्लल दैत्य से मुक्त कर भगवान् बलराम पूरे एक वर्ष भारतवर्ष की पवित्र नदियों और तीर्थों में विचरते हैं, और कुरुक्षेत्र में उन दो योद्धाओं को शान्ति का उपदेश देते हैं जिन्हें विधाता सुनने नहीं देता।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विङ्गडम् में पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की हमारी भक्तिमयी यात्रा। दशम स्कन्ध के इस उन्यासीवें अध्याय में श्री शुकदेवजी राजा परीक्षित को सुनाते हैं कि भगवान् बलराम ने ऋषियों से स्वीकार किया हुआ अपना दोहरा व्रत कैसे पूरा किया — पहले उस दैत्य का संहार कर जिसने उनके यज्ञ को दूषित किया था, और फिर बारह महीने तक पुण्यभूमि की परिक्रमा कर, नैमिषारण्य लौटकर शान्तिपूर्वक अपने यज्ञ सम्पन्न किए।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, उत्तरार्ध)

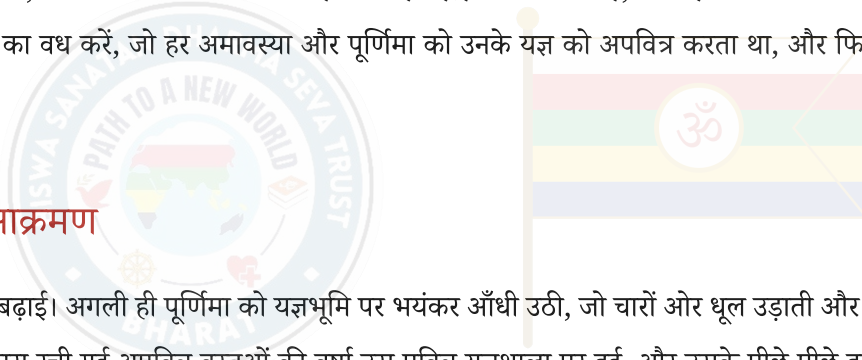
- अध्याय: 79 (एकोनाशीतितम अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: भगवान् बलराम की तीर्थयात्रा
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित को सुनाते हुए)
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: नैमिषारण्य की यज्ञशाला; सरयू से सेतुबन्ध तक भारतवर्ष के तीर्थ; कुरुक्षेत्र; द्वारका
- केंद्रीय विषय: बल्लव-वध; बलराम की वर्षभर की तीर्थयात्रा; भीम और दुर्योधन के गदायुद्ध को रोकने का उनका प्रयास; यज्ञों की पूर्णता और ऋषियों को विशुद्ध ज्ञान का दान
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 79, श्लोक 1-34
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, दशम स्कन्ध, अध्याय 79)

पूर्व अध्याय का संदर्भ

अठहत्तरवें अध्याय में भगवान् बलराम ऋषियों के दीर्घ सत्र के बीच नैमिषारण्य पहुँचे और वहाँ पुराणवक्ता रोमहर्षण को, जो उठकर उनका सम्मान करने में चूक गए थे, मार डाला। ऋषियों ने जब कहा कि यह ब्रह्महत्या के समान है, तो उन्होंने स्वयं प्रायश्चित्त माँगा। ऋषियों ने दो बातें चाहीं — वे बल्लव दैत्य का वध करें, जो हर अमावस्या और पूर्णिमा को उनके यज्ञ को अपवित्र करता था, और फिर बारह महीने भारतवर्ष के तीर्थों में विचरण करें।

यज्ञ पर दैत्य का आक्रमण

शुकदेवजी ने कथा आगे बढ़ाई। अगली ही पूर्णिमा को यज्ञभूमि पर भयंकर आँधी उठी, जो चारों ओर धूल उड़ाती और हर दिशा से पीब की दुर्गन्ध लाती थी। फिर बल्लव द्वारा रची गई अपवित्र वस्तुओं की वर्षा उस पवित्र यज्ञशाला पर हुई, और उसके पीछे-पीछे हाथ में त्रिशूल लिए वह दैत्य स्वयं प्रकट हुआ। उसका विशाल शरीर काजल के ढेर-सा काला था; उसके केश, मूँछ और दाढ़ी तपे हुए तौबे-से दहक रहे थे; और बाहर निकले दाँतों तथा तनी हुई भौंहों वाला उसका मुख देखने में अत्यन्त भयावह था।





पूर्णिमा के दिन बल्लव दैत्य द्वारा रची गई दुर्गन्धित आँधी और काली वर्षा यज्ञभूमि पर गिरती है, और हाथ में त्रिशूल लिए वह दैत्य स्वयं भगवान् बलराम के सामने प्रकट होता है।

उसे देखते ही बलराम ने अपने दो विख्यात आयुधों का स्मरण किया — शत्रु-सेनाओं को छिन्न-भिन्न करने वाला मूसल और दैत्यों का दमन करने वाला हल — और उसी क्षण दोनों उनके सामने उपस्थित हो गए।

हल और मूसल

बल्लव आकाश में विचर रहा था। बलराम ने हल की नोक से उसे फँसाकर नीचे खींच लिया, और फिर ब्राह्मणों के इस द्रोही पर क्रोध से जलते हुए उन्होंने मूसल से उसके सिर पर प्रहार किया।

तमाकृष्य हलाग्रेण बल्लवं गगनेचरम् ।

मूषलेनाहनत्क्रुद्धो मूर्ध्नि ब्रह्मद्रुहं बलः ॥ ५ ॥

tam ākṛṣya halāgreṇa balvalam gagane-caram mūṣalenāhanat kruddho mūrdhni brahma-druham balaḥ

अर्थ: आकाश में विचरते बल्लव को हल के अग्रभाग से नीचे खींचकर क्रुद्ध बलराम ने ब्राह्मणों के उस शत्रु के मस्तक पर मूसल से आघात किया।
(स्कन्ध 10, अध्याय 79, श्लोक 5)

मस्तक फटते ही वह दैत्य आर्तनाद करता हुआ धरती पर गिर पड़ा, जैसे वज्र से टूटा हुआ कोई लाल पर्वत-शिखर। पवित्र ऋषियों ने बलराम की स्तुति की, उन्हें कभी न चूकने वाले आशीर्वाद दिए और पवित्र जल से उनका अभिषेक किया, ठीक वैसे ही जैसे वृत्र-वध के बाद देवताओं ने इन्द्र को स्नान कराया था।

संस्तुत्य मुनयो रामं प्रयुज्यावितथाशिषः ।

अभ्यषिञ्चन् महाभागा वृत्रघ्नं विबुधा यथा ॥ ७ ॥

saṁstutya munayo rāmaṁ prayujyāvitathāśiṣaḥ abhyaṣiñcan mahā-bhāgā vṛtra-ghnaṁ vibudhā yathā

अर्थ: महाभाग मुनियों ने बलराम का स्तवन कर उन्हें अमोघ आशीर्वाद दिए और उनका अभिषेक किया, जैसे देवताओं ने वृत्रहन्ता इन्द्र का अभिषेक किया था। (स्कन्ध 10, अध्याय 79, श्लोक 7)



कृतज्ञ ऋषि भगवान् बलराम की स्तुति करते हैं, आशीर्वाद देते हैं, पवित्र जल से उनका अभिषेक करते हैं जैसे देवताओं ने इन्द्र का किया था, और उन्हें वैजयन्ती माला, दिव्य वस्त्र और आभूषण भेंट करते हैं (श्लोक 7-8)।

फिर उन्होंने उन्हें कभी न मुरझाने वाले कमलों की वैजयन्ती माला, जो लक्ष्मी का निवास है, दो दिव्य वस्त्र और दिव्य आभूषण भेंट किए।

तीर्थयात्रा का आरम्भ

ऋषियों की अनुमति लेकर बलराम ब्राह्मणों के साथ चल पड़े। वे पहले कौशिकी नदी पर गए और वहाँ स्नान किया, फिर उस सरोवर पर पहुँचे जिससे सरयू निकलती है। सरयू की धारा के साथ-साथ चलते हुए वे प्रयाग पहुँचे, जहाँ स्नान कर उन्होंने देवताओं, ऋषियों और पितरों का तर्पण किया, और वहाँ से पुलह ऋषि के आश्रम गए।

उन्होंने गोमती, गण्डकी और विपाशा में स्नान किया और शोण में डुबकी लगाई। गया में उन्होंने पितरों का पूजन किया, और गंगासागर-संगम पर आचमन-स्नान किया। महेन्द्र पर्वत पर वे भगवान् के पूर्व अवतार परशुराम से मिले और उन्हें आदरपूर्वक प्रणाम किया। उन्होंने सप्त गोदावरी, वेणा, भीमरथी और पम्पा सरोवर में स्नान किया; देवसेनापति स्कन्द के दर्शन किए और फिर शिवजी के धाम श्रीशैल पर चढ़े। द्रविड़ देश में

उन्होंने परम पावन वेंकटाद्रि के दर्शन किए, कामकोष्णी और काञ्ची नगरी से होते हुए सरिताओं में श्रेष्ठ कावेरी में स्नान किया, और श्रीरंग पहुँचे, जहाँ श्रीहरि नित्य विराजमान हैं। आगे वे हरि के क्षेत्र ऋषभ पर्वत, दक्षिण मथुरा, और अन्त में समुद्र पर बने सेतुबन्ध पर पहुँचे, जो बड़े-से-बड़े पाप का नाश करता है।



महापातकों का नाश करने वाले समुद्र-सेतु सेतुबन्ध पहुँचकर भगवान् बलराम ब्राह्मणों को दस हज़ार गौएँ दान करते हैं, और फिर मलय पर्वत पर अगस्त्य ऋषि की ओर बढ़ते हैं।

वहाँ हलधर ने ब्राह्मणों को दस हज़ार गौएँ दान कीं। कृतमाला और ताम्रपर्णी में स्नान कर वे मलय पर्वत पर आए, जहाँ अगस्त्य ऋषि ध्यान में बैठे थे। बलराम ने उन्हें प्रणाम किया, उनका आशीर्वाद और अनुमति पाई, और दक्षिण समुद्र की ओर बढ़े, जहाँ उन्होंने कन्या नाम से प्रसिद्ध दुर्गा देवी के दर्शन किए। इसके बाद वे पवित्र फाल्गुन तीर्थ और उत्तम पंचाप्सरस सरोवर पहुँचे, जहाँ भगवान् विष्णु नित्य विराजते हैं; वहाँ स्नान कर उन्होंने फिर दस हज़ार गौएँ दान कीं।

आगे चलकर वे केरल और त्रिगर्त देशों से होते हुए गोकर्ण पहुँचे, जो शिवजी का पावन क्षेत्र है और जहाँ धूर्जटि भगवान् सान्निध्य रखते हैं। उन्होंने द्वीप में विराजमान आर्या देवी के दर्शन किए, शूर्पारक गए, और तापी, पयोष्णी तथा निर्विन्ध्या में स्नान किया। दण्डक वन में प्रवेश कर वे रेवा नदी पर आए, जिसके तट पर माहिष्मती नगरी है; और मनुतीर्थ में स्नान कर वे अन्ततः प्रभास लौट आए।

युद्ध का समाचार और कुरुक्षेत्र की यात्रा

प्रभास में बलराम ने ब्राह्मणों से सुना कि कौरवों और पाण्डवों के युद्ध में प्रायः सभी क्षत्रिय मारे जा चुके हैं। उन्होंने समझ लिया कि पृथ्वी का भार उतर गया है।

श्रुत्वा द्विजैः कथ्यमानं कुरुपाण्डवसंयुगे ।

सर्वराजन्यनिधनं भारं मेने हृतं भुवः ॥ २२ ॥

*śrutvā dvijaiḥ kathyamānaṁ kuru-pāṇḍava-saṁyuge sarva-rājanya-nidhanaṁ bhāraṁ mene
hṛtaṁ bhuvaḥ*

अर्थ: ब्राह्मणों के मुख से यह सुनकर कि कुरु-पाण्डव संग्राम में समस्त राजन्यवर्ग का नाश हो गया, उन्होंने माना कि पृथ्वी का भार हर लिया गया है। (स्कन्ध 10, अध्याय 79, श्लोक 22)

यह जानकर कि भीम और दुर्योधन उसी समय रणभूमि में गदाओं से लड़ रहे हैं, यदुनन्दन उनका परस्पर विनाश रोकने की इच्छा से कुरुक्षेत्र गए। युधिष्ठिर, नकुल-सहदेव, भगवान् श्रीकृष्ण और अर्जुन ने उन्हें देखते ही प्रणाम किया और चुपचाप खड़े रहे, यह सोचते हुए कि वे क्या कहने आए हैं।



भीम और दुर्योधन को गदाएँ लिए एक-दूसरे के चारों ओर घूमते पाकर भगवान् बलराम उनसे कहते हैं कि वे समान बल के हैं और इस निष्फल युद्ध को रोक दें (श्लोक 25-

27)।

बलराम ने देखा कि दोनों योद्धा हाथों में गदा लिए, क्रोध से उन्मत्त और विजय के लिए आतुर, एक-दूसरे के चारों ओर विचित्र मण्डल बनाते घूम रहे हैं। उन्होंने कहा: “हे राजन्, हे वृकोदर, तुम दोनों वीर बल में समान हो। मेरे विचार से एक में शक्ति अधिक है, तो दूसरे में कौशल।”

तस्मादेकतरस्येह युवयोः समवीर्ययोः ।

न लक्ष्यते जयोऽन्यो वा विरमत्वफलो रणः ॥ २७ ॥

tasmād ekatarasyeha yuvayoḥ sama-vīryayoḥ na lakṣyate jayo 'nyo vā viramatv aphalo raṇaḥ

अर्थ: इसलिए, तुम दोनों समान पराक्रमी हो, अतः मुझे किसी की भी जय या पराजय दिखाई नहीं देती; यह निष्फल युद्ध बन्द हो। (स्कन्ध 10, अध्याय 79, श्लोक 27)

यद्यपि उनके वचन हितकारी थे और दोनों के कल्याण के लिए कहे गए थे, दोनों ने उन्हें स्वीकार नहीं किया। उनका वैर बहुत गहरा जड़ जमा चुका था; हर एक दूसरे के कटु वचनों और दुष्कर्मों को बार-बार याद कर रहा था। बलराम ने इसमें विधाता का हाथ पहचान लिया। और आग्रह न करते हुए वे द्वारका लौट गए, जहाँ उग्रसेन और अन्य स्वजनों ने हर्ष से उनका स्वागत किया।

नैमिषारण्य की दूसरी यात्रा

द्वारका से बलराम एक बार फिर नैमिष वन गए। वहाँ ऋषियों ने प्रसन्न होकर उनसे सभी प्रकार के यज्ञ करवाए — उनसे, जो समस्त कलह से विरत हो चुके थे और जिनका, वास्तव में, हर यज्ञ एक अंग है। फिर सर्वसमर्थ प्रभु ने उन ऋषियों को विशुद्ध, पारमार्थिक ज्ञान प्रदान किया।

तेभ्यो विशुद्धं विज्ञानं भगवान् व्यतरद् विभुः ।

येनैवात्मन्यदो विश्वमात्मानं विश्वगं विदुः ॥ ३१ ॥

tebhyo viśuddham vijñānam bhagavān vyatarad vibhuḥ yenaivātmany ado viśvam ātmānam viśva-gaṁ viduḥ

अर्थ: सर्वशक्तिमान् भगवान् ने उन्हें विशुद्ध विज्ञान दिया, जिससे उन्होंने इस विश्व को आत्मा में और आत्मा को विश्वव्यापी रूप में जान लिया। (स्कन्ध 10, अध्याय 79, श्लोक 31)



यज्ञ पूर्ण होने और ऋषियों के ज्ञान पाने पर भगवान् बलराम रेवती के साथ यज्ञान्त का अवभृथ स्नान करते हैं और अपने स्वजनों के बीच अपनी ही चाँदनी से घिरे चन्द्रमा की भाँति शोभित होते हैं।

अपनी पत्नी रेवती के साथ यज्ञान्त का अवभृथ स्नान कर बलराम सुन्दर वस्त्रों और आभूषणों से सजे अपने स्वजनों, बन्धुओं और सुहृदों के बीच ऐसे शोभित हुए जैसे अपनी ही चाँदनी से घिरा चन्द्रमा।

बलराम को माहेमा

शुकदेवजी ने परीक्षित को यह स्मरण कराते हुए अध्याय समाप्त किया कि यह तीर्थयात्री वास्तव में कौन हैं। बलराम अनन्त हैं, अप्रमेय प्रभु, जो अपनी ही माया से मनुष्य-रूप में प्रकट होते हैं; उनकी लीलाएँ गिनी नहीं जा सकतीं।

ईदृग्विधान्यसंख्यानं बलस्य बलशालिनः ।

अनन्तस्याप्रमेयस्य मायामर्त्यस्य सन्ति हि ॥ ३३ ॥

īdṛg-vidhāny asaṁkhyāni balasya bala-śālinaḥ anantasyāprameyasya māyā-martyasya santi hi

अर्थ: बलशाली बलराम के ऐसे कर्म असंख्य हैं — उन अनन्त और अप्रमेय प्रभु के, जो अपनी माया से मनुष्य-रूप धारण करते हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 79, श्लोक 33)

योऽनुस्मरेत रामस्य कर्माण्यद्भुतकर्मणः ।

सायं प्रातरनन्तस्य विष्णोः स दयितो भवेत् ॥ ३४ ॥

yo 'nusmareta rāmasya karmāṇy adbhuta-karmaṇaḥ sāyaṁ prātar anantasya viṣṇoḥ sa dayito bhavet

अर्थ: जो सायंकाल और प्रातःकाल अद्भुत कर्म करने वाले बलराम के कर्मों का स्मरण करता है, वह अनन्त भगवान् विष्णु का प्रिय हो जाता है। (स्कन्ध 10, अध्याय 79, श्लोक 34)

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. जो यज्ञाग्नि की रक्षा करते हैं, प्रभु उनकी रक्षा करते हैं। बल्लव का आक्रमण उन ऋषियों पर हुआ जिन्होंने किसी का अहित नहीं किया था, और उसे समाप्त करने स्वयं प्रभु उठे (श्लोक 5)। जो दिव्य की सेवा में जीता है, वह कभी रक्षक-विहीन नहीं रहता।
2. विनम्रता महानता का आभूषण है। वृत्र-वध के बाद इन्द्र की भाँति ऋषियों से सम्मानित होकर भी (श्लोक 7) बलराम ने मार्ग में परशुराम, अगस्त्य और शिव तथा दुर्गा के धामों के आगे सिर झुकाया। तीर्थयात्री का पथ झुके हुए मस्तक से चला जाता है।
3. पुण्यभूमि स्वयं एक गुरु है। नदियाँ, संगम, पर्वत और सन्तों के आसन इस अध्याय को भर देते हैं। उनमें स्नान, पितरों को तर्पण और दान — ये हृदय को शुद्ध कर उसे नए सिरे से सँवारने वाले कर्म बताए गए हैं।
4. प्रभु का परामर्श भी चुने हुए द्वेष को नहीं मिटा सकता। बलराम की शान्ति-प्रार्थना (श्लोक 27) पूर्ण थी, फिर भी भीम और दुर्योधन ने उसे ठुकरा दिया, क्योंकि वे अपनी शिकायतों को पोसना छोड़ने को तैयार न थे। कृपा द्वार खटखटाती है; द्वार भीतर से खोलना पड़ता है।
5. यज्ञ का लक्ष्य आत्मज्ञान में पूरा होता है। अध्याय कर्मकाण्ड पर नहीं, साक्षात्कार पर समाप्त होता है: ऋषि विश्व को आत्मा में और आत्मा को सब में देखने लगते हैं (श्लोक 31)। बाहरी उपासना भीतरी दृष्टि में पकती है।

6. उनके कर्मों का स्मरण हमें उनका प्रिय बनाता है। अन्तिम आश्वासन (श्लोक 34) सबसे सरल शिक्षा है — सुबह-शाम बलराम के कर्मों को याद करो, और अनन्त प्रभु तुम्हें अपना मान लेते हैं।

इस अध्याय से भक्त जो गहरा सत्य ग्रहण करेगा, वह “हर यज्ञ उनका अंग है” इन शब्दों में छिपा है। बलराम को किसी प्रायश्चित्त की आवश्यकता नहीं थी; वे हर कर्मकाण्ड की आत्मा हैं। फिर भी वे वर्षभर भारतवर्ष की धूलभरी राहों पर चले, क्योंकि उनके अनुयायियों को देखना था कि ब्राह्मणों, तीर्थों और पितरों के प्रति श्रद्धा कैसी होती है। कुरुक्षेत्र में उनकी तटस्थता भी उसी विधान का अंग है: प्रभास में ही वे जान चुके थे कि पृथ्वी का भार भगवान् के संकल्प के अनुसार उतारा जा रहा है, इसलिए उन्होंने सद्परामर्श दिया और फिर परमेश्वर द्वारा निश्चित दिशा के आगे झुक गए। प्रभु धर्म को जीकर सिखाते हैं, और जब नियति स्वयं उनका ही संकल्प हो, तो वे अपने भाई तक को आज्ञा मानने के लिए विवश नहीं करते।

एक भक्तिमय चिन्तन

इस अध्याय में हृदय को जो बात छूती है, वह सृष्टि के सबसे बलशाली का सबसे विनम्र मार्ग चुनना है। बलराम एक दृष्टि से दैत्य को विलीन कर सकते थे, फिर भी उन्होंने हल उठाया; वे अपनी निर्दोषता की घोषणा स्वयं कर सकते थे, फिर भी उन्होंने ऋषियों का प्रायश्चित्त स्वीकार किया और पैदल निकल पड़े। हर तीर्थ पर उन्होंने ठीक वही किया जो एक साधारण यात्री करता है — स्नान, तर्पण, प्रणाम, गोदान — और इस प्रकार उन्होंने तीर्थयात्रा के भाव को ही आगे आने वाले सबके लिए पवित्र कर दिया। कुरुक्षेत्र पहुँचकर जब उन्हें दो ऐसे पुरुष मिले जो पुराने घावों में इतने डूबे थे कि उन्हें सुन न सके, तो उन्होंने न क्रोध किया, न बल-प्रयोग। उन्होंने नियति को काम करते देखा और उसे होने दिया। हमें भी प्रेम से सत्य कहना है, अपना कर्तव्य करना है, और परिणाम प्रभु पर छोड़ देना है। और अध्याय का अन्तिम वचन हमें आश्चस्त करता है कि इनमें से कुछ भी हमारी पहुँच से बाहर नहीं। हम शायद कभी सप्त गोदावरी में स्नान न कर पाएँ, पर हर सुबह-शाम उन्हें याद कर सकते हैं, और शुकदेवजी वचन देते हैं कि अकेला वही स्मरण हमें उनका प्रिय बना देता है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज दो बार — एक बार सूर्योदय पर और एक बार सन्ध्या को — कुछ क्षण रुकिए और इस अध्याय से भगवान् बलराम का कोई एक कर्म याद कीजिए: बल्लव को नीचे खींचता हल, अगस्त्य के आगे झुका मस्तक, या कुरुक्षेत्र के कोमल वचन। उस स्मृति को उन्हें वैसे ही अर्पित कीजिए जैसे ऋषियों ने जल अर्पित किया, और प्रार्थना कीजिए कि आपका क्रोध उनके जैसा धैर्यवान् और आपका बल उनके जैसा विनम्र हो। आरम्भ में धीरे-धीरे जपें: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

उपसंहार

यह अध्याय भगवान् बलराम को नैमिषारण्य की दूषित यज्ञभूमि से भारतवर्ष के समूचे पावन मानचित्र पर, कुरुक्षेत्र के रणक्षेत्र तक और फिर घर ले जाता है। इसका एक ही सूत्र है — प्रभु की वह इच्छा कि वे जो धर्म सिखाते हैं उसे स्वयं जिएँ: वहाँ शुद्धि करें जहाँ उन्हें शुद्धि की आवश्यकता नहीं, वहाँ परामर्श दें जहाँ वे जानते हैं कि सुना नहीं जाएगा, और सबके शिखर पर ऋषियों को वह ज्ञान दें जो सबमें आत्मा को देखता है। जो प्रभु तीर्थयात्री बनकर चले, उनकी स्मृति हमें भी सुबह-शाम का तीर्थयात्री बनाए, जब तक उनका स्मरण हमारी भक्ति की साँस ही न बन जाए।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी), दशम स्कन्ध (उत्तरार्ध), अध्याय 79, पृष्ठ 449–452।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संबंध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-79-lord-balarama-goes-on-pilgrimage-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट